(ख) यदि हां, तो उन कागज मिलों के नाम और पते क्या हैं जिन्होंने कागज के मूल्य बढ़ाये हैं; और

(ग) कागज का मूल्य जब 2750 रुपये प्रति मी० टन था तब प्रति मी० टन उत्पादन लागत (श्रमिकों की मजरी, विद्युत और कच्चा माल) कितनी थी और अब यह बढ़ कर कितनी हो गई है ?

उद्योग तथा इस्पात खान और मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी) : (क) और (ख) कागज नियन्त्रण आदेश 1979 में यथा सफेद परिभाषी कागज को छोड़कर विभिन्न किस्म के कागज पर कोई भी कानूनी नियंत्रण नहीं है । कागज उद्योग ने अगस्त, 1974 में 2750/–रुपये प्रति मी० टन की दर से छपाई के सफेद कागज का संभरण करने का प्रस्ताव किया था । इसके पश्चात् कागज (नियंत्रण) आदेश 1979 के द्वारा छपाई के सफेद कागज के कारखाने से निकलते समय के मूल्य, समय-सयम पर निम्न प्रकार से बढ़ा दिये गये :—

तिथि	प्रति मी० टन मूल्य
30–6–1979	3000/–रु०
29–11–1980	3500/–रु०
24–12–1981	3200–रु /

(ग) वष 1974 मैं छपाई के सफेद कागज के संभरण के लिए जब 2750/– रुपये प्रति मी० टन का प्रस्ताव किया गया था, तब इसकी औसत लागत लगभग 2300 रु० प्रति मी० टन थो । 4200 रुपये मूल्य का अपेक्षाकृत अधिक मूल्य कुशलता वाले एककों के उत्पादन की भारित औसत लागत पर आधारित है जिसमें लागत अध्ययन के लिए चुकने गए छपाई के सफेद कागज के उत्पादक एककों का दो-तिहाई उत्पादन शामिल है ।

विभिन्न इस्पात और संयंत्रों में इस्पात का उत्पादन

1597. **श्री निहाल सिंह** : क्या **इस्पात और खान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान देश के विभिन्न इस्पात संयंत्रों में कितने इस्पात का उत्पादन किया गया और प्रत्येक संयंत्र में इस्पात की कितनी अन-बिकी मात्रा पड़ी हुई है ; और

(ख) इस समय संयंत्रों में पड़े इस्पात का मूल्य कितना है और इसे विदेशी बाजार में बेचने के लिए क्या कार्यवाही की गयी है ?

उद्योग तथा इस्पात और खान मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी) : (क) और (ख) गत तीन वर्षों तथा इस वर्ष (अप्रैल-सितम्बर, 1982) के दौरान "सेल" के सवतोमुखी इस्पात कारखानों तथा "टिस्को" का विक्रेय इस्पात का उत्पादन इस प्रकहै :—

(हजार टन)

वर्ष	सेल के कारखाने	टिस्को
1979–80	4635	1447
1980–81	4766	1537
1981–82	5651	1605
1982–83 (अप्रल-सितम्बर, 1982)	2553	760

1-9-82 को कारखानों में स्टाक की मात्रा तथा उसका मूल्य इस प्रकार था :—

	मात्रा (लाख टन)	मूल्य (करोड़ रुपये)
1. सेल के सर्वतोमुखी इस्पात कारखाने	3.37	130
2. टिस्को	0.66	29.07

जुलाई, 1982 में "सेल" ने 10,974 टन गर्म बेलित कायलों का निर्यात किया था । गम बेलित क्वायलों का और अधिक निर्यात करने की सम्भावनाओं का पता लगाने के लि प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इस समय मन्दी की स्थिति को देखते हुए निर्यात के लिए कोई नए करार करना सम्भव नहीं हो सका है ।

Setting up of New H.M.T. Units in Karnataka

1598. SHRI S.M. KRISHNA : Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state :

(a) whether the Hindustan Machine Tools has plans for expansion by way of setting up new projects for watch an machine tools in the State of Karnataka ;

(b) if so, the nature of the expansion pattern and plans ;

(c) how many units are proposed to be set up by HMT outside the state in the future; and

(d) the locations thereof ?

THE MINISTR OF INDUSTRY AND STEEL AND MINES (SHRI NARAYAN DATT TIWARI) : (a) to (d). HMT have been granted an industrial licence for the manufacture of stepper motors and a Letter of Intent for manufacture of qartz digital watches in the State of Karnataka. HMT have also been granted Letters of Intent for manufacture of fuel injection equipment in Himachal Pradesh and miniature button type bettery cells in the State of Assam. Approval has also been given to HMT for setting up a watch factory in Uttar Pradesh.

"IMPORT OF COLOUR T.V UITS"

1599. SHRI G.Y. KRISHNAN Will the PRIME MINISTER be pleased to state :

(a) whether Government's attention has been drawn to news item apperaring in the Hindustan Times dated 19 September, 1982 that the electronic components industry has claimed that it could meet the bulk of the demand for components for colour TV.

(b) whether it has appealed to Government to stop any further import of colour TV kits if it wished the indigenous electronic componenets industry to survive ; and

(c) if so, the reaction of Government thereon ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE DEPARTMENT OF ELECTRONICS (SHRI. M.S. SANJEEVI RAO) : (a) Yes sir

(b) Yes, Sir.

(c) These factors would be taken into account while formulating the long term industrial and technology policy for colour TV receiver production.